Digitization by eGangotri-South Center

श्रीमद् मानतुङ्गाचार्य रचित

भक्तामर स्तोत्र

(आदिनाथ स्तोत्र)

श्री कल्याण ऋषि

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

□ प्रकाशक :–
श्री अमोल जैन ज्ञानालय
कल्याण स्वामी रोड,
धुलिया (महाराष्ट्र)

□ संशोधित छठ्ठम आवृत्ति
३००० प्रति
विक्रम संवत् २०४२
वीर सवत् २५११
ईसवी सन् १९८६
अमोलाद्व ५०

मुद्रक : नंदलाल हुकमीचंद रुणवाल
रुणवाल प्रिंटर्स
ग. नं. २, धुलिया. फोन नं. २४५०

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

प्रकाशक की ओर से

जैन संघ में प्रचलित स्तोत्रों में भक्तामरस्तोत्र का बहुत अधिक महत्व है। आचार्य श्री मानतुंग द्वारा रचित यह स्तोत्र बहुत ही प्रभावक, आल्हादक, और रसोत्पादक है। भक्तिरस की अनुपम धारा इसमें प्रवाहित है। इस स्तोत्र का पाठ करते समय भव्यजन जिनेश्वर देव के प्रति गहरी तन्मयता का अनुभव करते हैं। आध्यात्मिक स्तोत्र होने के साथ ही साथ इसकी चमत्कारिता के विषय में अनेक कथाएँ विख्यात है। इसे कलियुग का कल्पवृक्ष भी कहा गया है। संक्षेप में यह स्तोत्र बहुत ही भावपूर्ण और प्रवाहपूर्ण है। इसलिए जैन संघ में इस स्तोत्र की बहुत महिमा है और इसका बहुत प्रचलन भी है।

आचार्य श्री मानतुंग ने संस्कृत भाषा में इस स्तोत्र की रचना की है। आजकल संस्कृत भाषा का प्रचलन कम होने से सर्व साधारण इस स्तोत्र के भावो को नहीं समझ सकता। इसलिये इस प्रकाशन में संस्कृत के साथ ही साथ उसका हिन्दी भावार्थ भी दिया गया है। इस स्तोत्र की गरिमा को अहिन्दी भाषी और पाश्चात्य जनता भी समझ सके और इसके अनुपम रस का आस्वादन कर सके इस हेतु अंग्रेजी भाषान्तर भी प्रत्येक श्लोक के साथ दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

इस प्रकार इस प्रकाशन को सर्वजनोपयोगी बनाने का प्रयत्न इसके संयोजक पं. मुनि श्री कल्याणऋषिजी म. सा. ने किया है। इसके लिये संस्था की ओर से हम मुनि श्री के बहुत आभारी हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन में दिया गया हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषान्तर 'तीर्थंकर' मासिक से साभार लिया गया है तदर्थ हम उक्त सम्पादक प्रकाशक बन्धुओं के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

भक्तामर स्तोत्र का यह छठा संस्करण है। धर्म प्रचार एवम् स्वाध्याय प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिये यह प्रकाशन अर्धमूल्य में वितरित किया जा रहा है।

श्री अमोल जैन ज्ञानालय के प्रकाशन की सूची इसी पुस्तक में दी है। प्रार्थना है कि धर्म परायण लोग इसका लाभ लें।

प्रा. प्रेमसुख कन्हैयालाल छाजेड
मंत्री
श्री अमोल जैन ज्ञानालय
धुले (महाराष्ट्र)

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

श्री अमोल जैन ज्ञानालय; धुलिया

प्रकाशन सूची

अनुक्रमांक	पुस्तक का नाम	पृष्ठ	अर्ध मूल्य
	आगम ग्रन्थ		
१	श्री आचारांग सूत्र (पुस्तकाकार) मूल हिन्दी	३८०	५·००
२	श्री सूयगडांग सूत्र " " "	३४४	५·००
३	श्री अन्तगड़ सूत्र (पत्राकार) " "	१४८	४·००
४	जो सुधर्मा स्वामीने सुना (देव)	२६०	१·२५
५	जो सुधर्मा स्वामीने सुना (गुरु)	३२८	१·५०
	तात्त्विक ग्रन्थ		
६	धर्म तत्व संग्रह	१५४	२.००
७	पच्चीस बोलका थोकडा	४०	०.७५
८	आतुर प्रत्याख्यान	२६	०.३०
९	जैन तत्व प्रकाश (दसवीं आवृत्ति)	७०२	२५.००
	कथासंग्रह (गद्यमय)		
१०	महासती श्रीमति	१२०	१.००
११	महासती मदनरेखा	१०६	१.००
१२	अभयकुमार	९६	२.००
१३	श्री अनुत्तरोप पातीक सूत्र	३६	३.००
१४	प्रद्युम्नकुमार चरित्र	३२८	५.००
१५	धर्मवीर जिन-दास	२८०	५.००
१६	धन्ना शालिभद्र चरित्र	२८२	५.००

स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा० का—

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

१७	जीवन चरित्र--हिन्दी	४०४	१.६०
	--मराठी	२४४	२.००
१८	कल्याण कथा कोष -- भाग १	३४०	७.००
१९	,, ,, ,, --भाग २	३५२	७.००
२०	,, ,, ,, --भाग ३	३५२	७.००
२१	मृगांकलेखा	१०४	२.००

ढाल चौपाई (पद्यमय साहित्य)

२२	सायर तरंगिणी	२७०	२.००
२३	चन्द्रसेन लीलावती	२१२	२.५०
२४	नवरत्न राशि; भाग--२	२२६	४.००
२५	हरिवाहल-चरित्र	११४	२.५०
२६	आलोयणा (स्व० प्रेमचन्दजी महाराज)	३२	१.००
२७	सदा स्मरण (नित्यपाठ) दसवीं आवृत्ति	१००	०.५०
२८	विद्याविनोदिनी	२००	१.५०
२९	पंचरत्नराशि (कुलक संग्रह)	१००	२.००
३०	सुगेय गीतिका	६२	०.७५
३१	पारस स्तवन संग्रह	४००	२.००
३२	त्रि-चरित्र संग्रह	४४	०.७५
३३	परमात्म मार्ग दर्शक	३४२	२०.००
३४	सिंह सेवक बना	१२८	४.००
३५	उपाशक दशंक	१४४	५.००
३६	श्रीमद् अन्तकृद्दशांग सूत्र	१३७	६.००

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

श्री नमस्कार मन्त्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ! !

लोगस्स

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुन्थुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।४।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।५।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर प्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥

युग के आदि में भक्ति-विभोर देवों की विनम्र मुकुट-मणियों की कान्ति को अधिक द्युतिमन्त करने वाले; पापान्धकार का हलन करने वाले, तथा संसार पयोधि में पड़ते हुए मनुष्यों के आलम्बन जिनेन्द्र भगवान् के चरण-युगल को सम्यक् प्रणाम करके—

After duly and respectfully bowing at the pair of feet of the great Almighty (the Conqueror), the feet, which illuminate the lustre of the gems-studded in the diadems of the devout gods having bent in obeisance to Lord Adinath; the feet which are the destroyer of the canopy of the Sins and the Isle of rescue to the persons falling in the ocean of the World in the quadrant period.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

यः संस्तुतः सकलवाङ् मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रं ॥

संपूर्ण वाङ्मय के तत्वबोध से जिन्हें बुद्धि-कौशल की सम्प्राप्ति हो चुकी है, ऐसे देवेन्द्रों द्वारा त्रिभुवन के चित्त को आकर्षित करने वाले उदार स्तोत्रों से स्तूयमान उन प्रथम जिनेन्द्र की मैं भी स्तुति करता हूँ ।

(It is strange that) I should conduct the Eulogy of the first Jinendra (the biggest conqueror) who has been hymned and worshipped in magnificent encomiums and thus magnetising the hearts of the people of the three worlds, composed by the Lords of gods talented in grasping the essence of the sacred scriptures.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥

हे देवों द्वारा पादपीठार्चित ! मैं बुद्धियोग से रहित होते हुए भी आपकी स्तुति करने के लिए समुद्यतमति हो रहा हूँ, (निश्चय ही) निर्लज्ज हूँ जल की चन्द्रच्छाया को सहसा ग्रहण करने के लिए बालक के अतिरिक्त अन्य कौन इच्छावान् हो सकता है ?

Due to immodesty and impudence, I though deficient in intellect, am intent on praising your foot stool (out of courtesy, it means feet) which has been already worshipped by the celestial gods. Who else but a child wants to catch hurriedly the image of the moon reflected in water ?

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशांककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥

हे गुण-समुद्र ! चन्द्रमा के समान (आल्हादक, अमृतमय, उज्ज्वल, शीतल) कान्त आपकी गुणावली का वर्णन केवल बुद्धिविलास से क्या देवगुरु बृहस्पति की समता रखने वाला भी कर सकता है ? प्रलयकाल के उनचास पवन-संचार से क्षुब्ध एवं भयंकर मकर-निकर से आपूर्यमाण जलधि को भुजबल से तैरने में कौन समर्थ है ?

O ye! the ocean of virtues! who can, be he in intelligence, like the preceptor of celestial gods, describe thy bright merits glittering like the lustre of the moon? Who can swim with his arms the tumultuous ocean abounding in crocodiles and alligators and agitated by the tempest of the world's final annihilation.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थं ।।

हे मुनीश ! (आपके गुणों की अनन्तता, अपनी अल्पबुद्धि तथा बालचेष्टा को जानते हुए भी) मैं असमर्थ होते हुए भी आपकी भक्ति के वश में होने से स्तुति के निमित्त प्रवृत्तिमान हुआ हूँ । अपने शिशु पर आक्रमण करते हुए सिंह को देख कर प्रीति-वात्सल्य से प्रेरित हिरनी अपने छौने की रक्षा के लिए अल्पशक्ति की अवगणना कर क्या मृगराज का सामना नहीं करती ?

O ye supreme Sage ! though I am deficient in calibre and devoid of intellect, yet prompted by my devotion to you, I undertake to compose this Encomium. Does not a doe impelled by the affection for her fawn oppose the lion to deliver her young ones from his clutches not considering her prowess ?

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection.

Digitization by eGangotri-South Center

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ॥

हे भगवन् ! शास्त्र का अल्पज्ञान आगमविज्ञों के समक्ष हास्य का स्थान बन जाता है; (किन्तु क्या करूँ) तुम्हारी भक्ति मुझे बोलने के लिए बलपूर्वक प्रेरित कर रही है। वसन्त ऋतु में कोकिल पक्षी मौन नहीं रह सकता, पंचम स्वर में मधुर-मधुर आलापने लगता है, उस अवश मुखरता में रमणीय आम्र-मंजरी की सर्वत्र उपस्थिति ही एकमात्र कारण है।

My devotion to you alone impells me to become garrulous in this panegyric-me, a man of petty knowledge and hence an object of ridicule in the society of persons learned in the lore of spiritual science; just as the cluster of the mango sprouts incites the cuckoo to coo the melodious tune in the spring season.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Collection, ITL.

Digitization by eGangotri-South Center

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात् क्षयमुपैतिशरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥

हे भगवन् ! जिस प्रकार समस्त लोक को अभिभूत करने वाला, भ्रमरावलि के समान कृष्णवर्णा रात्रि का अन्धकार सूर्य किरणों से शीघ्र ही छिन्न-भिन्न हो जाता है; उसी तरह आपकी स्तुति करने से शरीरधारियों के साथ जन्म-परम्परा-रूप बन्धन को उत्पन्न करने वाला पाप क्षण-काल में क्षीण हो जाता है ।

Just as the rays of the sun quickly and completely destroy the darkness stretching into the Universe, as black as the bees. Similarly the Sins of the living beings having accrued in the never ending chain of transmigrations are instantaneously annihilated by praising you.

துவத் சன்ஸ்தவேன் பவ சன்ததி சன்னிபத்தம்
பாபம் க்ஷணாத் க்ஷயமுபைதி சரீரபாஜாம்
ஆக்ரான்த லோக மலினீல மசேஷமாஷு
சூர்யாம்சு பின்னமிவ சார்வரமந்தகாரம்

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥

हे नाथ ! ऐसा मानकर अल्पबुद्धि होते हुए भी मैंने आपके प्रभाव से यह स्तुति आरम्भ की है। (मुझे विश्वास है) यह संस्तवन सज्जनों के हृदय को प्रिय प्रतीत होगा। कमल-पल्लवों पर स्थित ओसकण मौक्तिक-जैसी कान्ति को धारण करते हैं; अर्थात् तुहिन-विन्दु में यद्यपि मुक्ताफलत्व नहीं है तथापि कमल-पत्र के उत्तम आश्रय में उसमें वैसी प्रतीति होती है; मेरी वाणी में भी वैसे कोई विशिष्टता नहीं है किन्तु वह जिनेन्द्र-चरणार-विन्द की मधुपी है; अतः सज्जनों में समादृत होगी।

O Lord ! I assume that this panegyric though composed by me-a man of scanty intellect, will under thy influence captivate the minds of noble persons. Inded the drops of water in contact with the lotus-leaves do obtain the splendour of pearls.

CC-0. In Public Domain. Gurukulam Collection, Trichy

Digitization by eGangotri-South Center

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ।।

हे परमात्मन् ! आपके स्तोत्र की महिमा के सम्बन्ध में तो कुछ कहा ही नहीं जा सकता, वह तो सम्पूर्ण भव-दोषों को समाप्त करने वाला है । आपकी तो पवित्र कथा भी दुरितहर है; जैसे साक्षात् सूर्य तो दूर ही रहता है, किन्तु उसके प्रभास्पर्श से जलाशयों में कमल सहज ही खिल उठते हैं ।

Although the sun is far away, yet through its radiance alone blossoms the lotuses in the ponds. Likewise what to say the Encomium of you free of all defects, the narration of thy doings will itself prove destructive of the evils of the Living Beings.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ?॥

हे भुवनभूषण ! संसार द्वारा वरणीय अलंकार ! हे प्राणि मात्र के स्वामिन् ! आप में विद्यमान गुणों का वर्णन करते हुए जो आपकी समीचीन स्तुति करते हैं, वे आपके सदृश ही हो जाते हैं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है; क्योंकि जो अपने वैभव का आश्रयेप्सु हो, उसे यदि वह अपने समान न बनाये तो उस विभूतिधर से भला क्या लाभ ?

O supremely splendid personality of the world and the protector of the living beings ! It is not surprising that those who eulogise you, the abode of true virtues, become equal to you. What is the use of a master if he does not make his dependents equal to him in wealth and dignity.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ? ॥

हे प्रभो ! अपलक नेत्रों से (निरन्तर) दर्शनीय आपको दृष्टिगोचर करने के अनन्तर लोकनेत्र अन्यत्र कहीं दर्शन सन्तोष को प्राप्त नहीं होते। (ऐसा स्वाभाविक ही है; क्योंकि) इन्दु-किरणों के समान शुभ्र क्षीरसागर का पय पीकर कौन ऐसा जन होगा जो लवणाकर का क्षारवारि पीने की इच्छा करेगा ?

The eyes of man after seeing you, who deserves to be looked at always with untwinkling eyes, do not find satisfaction elsewhere. Who will like to sip the saline water of the sea after he has tasted the water of the milky sea possessing the splendour of the moon.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ।।

हे त्रिभुवन के एकमात्र सौन्दर्यसार ! जिन शान्तराग तेजोधर परमाणुओं से आपका विग्रह निर्मित है, वे परमाणु तावन्मात्र ही इस पृथ्वी पर विद्यमान थे, अतः आपके सदृश कोई और रूप नहीं हैं। यदि उन वीतराग-परमाणुओं का कोई अंश इस धरित्री पर बचा होता तो कदाचित् आप सदृश अन्य निर्माण संभव था; किन्त पृथ्वी के समस्त अराग परमाणु तो आपके निर्माण में ही परि-समाप्त हो गये तब आपकी तुलना करने योग्य अन्य कोई कैसे अस्तित्वमान हो सकता है ? अर्थात् आप सर्वोत्कृष्ट हैं, अतुल्य हैं ।

O unique embellishment of the three worlds ! those quiet and splendid atoms with which your body has been built, are in fact lsmited to that extent only, as there is no other Beauty like you on this Earth.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥

हे अनिन्द्य सुन्दर ! देव, मनुष्य, विद्याधर, धरणेन्द्र आदि के नेत्रों को आकर्षित करने वाला तथा त्रिभुवन के उपमान द्रव्यों को समग्र भाव से विजित करने वाला मुख कहाँ और कहाँ कलंक-कालिमा से मलिन, दिन में जिर्ण-पत्रवत् पाण्डु होने वाला चन्द्रबिम्ब ?

O Ye Lord ! thy splendid face which has focussed the eyes of gods, men and serpents, surpasses all the objects of comparison in this threefold world. How can it be compared to the disc of the moon which is stained by dark spots and turns pale in the day like leaves of Buteafrondosa (Palash).

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सम्पूर्णमण्डलशशांककलाकलाप–
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।।

हे भगवान् ! शुभ्रता में आपकी गुणवत्ता चन्द्रमा के समग्र मण्डल के कला-प्रभावों-सी समुज्ज्वला है, उसने तीनों भुवनों की सीमा को अतिक्रान्त किया है, वह अपरिसीम है, कहीं कोई तट नहीं है उस गुणवत्ता का । जिसके जीवन की एकमेव शरण जगदीश्वर आप ही हों तो फिर उसके स्वतन्त्र विचरण पर अंकुश किसका/कैसा?

O Lord ! Your illuminating virtues as bright as the silvery moon outstep the three worlds. How can those who have been patronised by the singular and matchless Almighty of the three Worlds be impeded by any body in their free movement.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ?।।

लावण्य, उन्माद और सुषमा में संतरित देवांगनाएँ अपने मादक हावभाव से जिसके चित्त में किंचित् विकार उत्पन्न न कर सकीं तो इसमें आश्चर्य कैसा ? प्रलय के उनचास पवन नगण्य पर्वत-शिखर को ध्वस्त कर सकते हैं; किन्तु मन्दराचल का सुरम्य शिखर तो अविचल/अकम्प ही खड़ा रहता है ।

It is no wonder if the celestial goddesses could not deflect your mind even a bit towards carnal inclinations. Can the gales of the Doom's Day (world's final Annihilation) shaking all the mountains, ever shake the peak of Mount Sumeru ?

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ।।

हे प्रभो ! तुम ऐसे अद्वितीय दीपक हो जहाँ न धुआँ है, न बाती और न तैलपूर; आप वस्तुतः ऐसे दीप हैं जो तीनों लोकों को सांगोपांग उद्घाटित करता है और जो पर्वतों को झकझोर देने वाले प्रचण्ड तूफानों की पहुँच से परे है ।

O Lord ! You are the supernatural lamp of rare splendour illuminating the entire Universe (diffusing right knowledge) with no smoke (hatred), no wick (sensual desires), no oil (attachment) and unaffected by the storms (heretical one-sided dogmatisms.)

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ।।

हे ज्योतिर्धर ! तुम्हारी प्रभा सूर्य के दुस्सह-अदम्य आलोक से भी अधिक तेजोमय हैं; क्योंकि उसका कहीं कोई अस्त नहीं हैं और वह राहु की पहुँच-परिधि में भी नहीं है । वह सहज ही तीनों लोकों को युगपत् आलोकित करता हैं/ प्रकट करता है । तेरे इस अप्रतिम आलोक को तो सघन मेघ भी आच्छादित करने में असमर्थ हैं ।

As You never set, you are neither affected by the Rahu (eclipse), nor your supernatural grandeur ever overshadowed by the cumulus of the clouds and as you simultaneously enlighten the entire universe, You, therefore, O Supreme Sage ! excel the grandeur of the Sun.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥

हे प्रभो! तुम्हारा मनोज्ञ मुख-कमल विश्व को आलोकित करने वाला ऐसा अपूर्व चन्द्रमा है, जो नित्य उदित है, जिसने मोहान्धकार को ध्वस्त कर दिया है, और जिसे काले बादल तथा राहु ढक सकने में सर्वथा असमर्थ हैं।

O Lord ! your splendent lotus-like face which always remain risen, has destroyed the darkness of delusion, can never be affected by the Rahu nor shadowed by the clouds, and which has always illuminated the Universe, shines like the disc of a singular and peerless Moon.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

किं शर्वरीषु शशिनाऽन्हि विवस्वता वा ?
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ !
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥

हे नाथ ! जब तुम्हारा मुख-चन्द्र ही अन्धकार को अस्तित्वशेष कर चुका हो, तब क्या प्रयोजन है मुझे सूरज से, चन्द्र से, उनसे होने वाले दिन से, कौमुदी/ज्योत्स्ना से। जब धान की फसलें पक चुकी हों तब जल-भार से झुकीं मेघा-वलियों का क्या अर्थ है ?

O Lord ! when your moon-like face can destroy the darkness and illuminate the entire universe, there is no need of the moon in the night and the Sun during the day, just as one wonders, of what use are the clouds heavy with the weight of water on the rice fields in the country after the rice grains have ripended ?

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ।।

द्रव्य/पदार्थ की अनन्त पर्यायों को प्रकाशित करने वाला केवलज्ञान जैसा आप में शोभायमान है; वैसा अन्य देवों में नहीं । जो सहज दमक मणि में गौरव को प्राप्त करती हैं; वह किरणों से आलोकित काँच के टुकड़े में भला कैसे संभव हैं ?

Just as the magnificence of the light of the glittering jewels cannot be procured by a piece of glass even abounding in the rays of the Sun, so also omniscience (that throws light on the various phenomena of any subject) hoving found accomodation in you, glows with such splendour that it is not perceptible in other gods like Hari, Har etc.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ।।

हे नाथ ! हरि हर आदि देवों को देखना मैं इसलिए अधिक श्रेयस्कर मानता हूँ कि उन्हें देखने से हृदय आप में अधिक सन्तोष का अनुभव करता है; किन्तु आपके देखने से क्या लाभ कि जिससे जगत् में कोई और देवता जन्मान्तर में भी मन को नहीं लुभा पाते अर्थात् कोई लाभ नहीं है ।

O Lord ! I consider it better that I have seen Hari, Har and other gods first, because after seeing them my heart finds satisfaction in you. What good is it to look at you first ? After seeing you, there is no other god to captivate my heart on the Earth even in the future births.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥

सौ-सौ माताएँ सौ-सौ पुत्रों को जन्म देती हैं, किन्तु क्या कोई जननी तुम जैसा पुत्र अब तक जनम पायी है? सच है, नक्षत्रों को तो सारी दिशाएँ धारण करती हैं किन्तु दैदीप्यमान किरण-सम्पन्न सूर्य की प्रसविनो तो पूर्व दिशा ही है ।

Hnndreds of women give birth to sons hundreds of times, but no mother has given birth to a son like you. All the (eight) directions may hold the plants, but it is the East only which can produce the Sun with its cumulus of thousands of flashing rays.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥

हे मुनीन्द्र ! मुनिजन तुम्हें अन्धकार से आगे सूर्य के समान तेजोमय परम पुरुष मानते हैं; अतः जिसने तुम्हें समग्र/सम्यक् उपलब्ध कर लिया, वह मृत्युञ्जय मृत्यु की परिधि से बाहर आ खड़ा हुआ। मौत फिर उस मृत्युञ्जयी पर आँख नहीं उठा पाती, उसे छू नहीं पाती; इसलिए तुम्हें छोड़ दूसरी कोई कल्याणकारी मुक्ति डगर नहीं है।

O the best amongst the Sages ! the saints consider you the supreme being, the Sun in having overcome the darkness of ignorance, also hold you pure purged of impurities. They overcome Death after having duly obtained you. There is no other beneficial way to Bliss, tranquility and salvation except through you.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥

संतजन तुम्हें अक्षय, व्यापक, अचिन्त्य, अद्भुत, संख्यातीत, आदिपुरुष, सकल कर्म-रहित, कृतकृत्य, अन्त-रहित, कामदेव को अस्तित्वशेष करने के निमित्त केतु, योगेश, योगज्ञ गुण-पर्याय की अपेक्षा अनेक, जीव-द्रव्य की अपेक्षा एक/अद्वितीय, केवलज्ञान-स्वरूप, कर्म-मल-मुक्त कहते हैं। तुम्हारे इस अनामी, बहुनामी, नामी, बहुआयामी व्यक्तित्व को शत-सहस्र प्रणाम !!

The holy sages regard you as imperishable, majestic (the abode of sterling merits), incomprehensible, innumerable, the first and Principal founder of Religion, the supreme self-immersed soul. Almighty of the three worlds (self-accomplished). Infinite (possessor of infinite excellences), like a Ketu in vanquishing the Cupid (Deity of sexual passions), the chief amongst the meditators, conversant with you (the science of self absorption and cessation of corporeal activities), multifarious (with regards to merits and properties), singular (with regards to substance), knowledge personified and free from all foreign matter (the dirt mortal sins or Karmas).

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्-
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धातासि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥

देवों/गणधरों/विद्वज्जनों ने, हे प्रभो! तुम्हारे कैवल्य-गौरव की अर्चना की है, अतः तुम्हीं बुद्ध हो; तीनों लोकों के प्राणियों के लिए सुख/ स्वस्ति करने वाले हो अतः तुम ही शंकर हो; हे धीर पुरुष ! रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग की विधि-संरचना के कारण तुम विधाता हो। भगवन् ! तुम स्पष्टतः पुरुषों में उत्तम होने से नारायण हो ! !

You are the Buddha as the other gods and learned persons (Ganahar etc.) have worshipped and commended your self-Awakening, (Omniscience), you are the Shankar (Shiv) as you are the benefactor of the summum bonum (highest good) to the living beings of three worlds. O Resolute One ! you are the providence (creator) as you have constituted the ordinations of the Path of salvation (codifier of the rules of emancipations). Thus, O Lord ! it is manifest that you being the best amongst the persons are the only Purushottam.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमोजिन ! भवोदधिशोषणाय ।।

तीनों लोकों को संत्रास, संताप और कुण्ठा से निवृत्त करने में समर्थ, तुम्हें प्रणाम; इस धरती के पूत, पवित्र, परम पावन शृंगार, तुम्हें नमन; तीनों लोकों के प्रभु परमेश्वर, तुम्हें वन्दन; इस भवसागर के अगस्त्य-शिल्पी, तुम्हें भक्ति-विबहल अर्चन ! ! ! !

O Lord ! bow to you, the annihilator of the afflictions of the three worlds, bow to you the purest and the most resplendent jewel on the face of Earth, bow to you the Paramount Almighty of the three worlds. O Jin (conqueror) I bow to you, the Absorbent of the ocean of Births and Deaths.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥

हे मुनियों के मुनि ! इसमें कौन आश्चर्य है कि जगत् के अशेष गुणों ने कहीं शरण न पाकर तुम में ही शरण ग्रहण की है; और दोषों ने, जिन्हें अन्यजनाश्रय के कारण मिथ्या दंभ हो गया है, स्वप्न में भी तुम्हारी ओर नहीं देखा है ?

O the Best amongst the sages ! it is not strange if all the virtues have taken shelter in you in densely clustered numbers and if the faults (vices) being puffed up with pride in having attained the patronage of other deities did not cast a glance at you in a dream.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ।।

हे विभो ! उन्नत अशोक तरु-तले, ऊपर की ओर स्फूर्त किरणों वाला आपका अत्यन्त निर्मल रूप बादलों के निकटवर्ती अंधकार के जमाव को ध्वस्त करने वाले सूर्य-बिम्ब के समान शोभा पाता है।

O Lord ! while seated under the Ashoka tree (Jonasia ashoka) your resplendent and spotless body look extraordinarily elegant, like the Sun in close proximity of the dense clouds radiating its brilliant rays and dispelling the expanse of darkness.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥

मणि-किरणों कीं बहुविध दीप्ति-अनियों से विभूषित सिंहासन पर आपकी कनकवर्णी काया ऐसी ऐश्वर्यशालिनी लगती है जैसे गगन-चूमती उदयाचल की चोटी पर आकाश में किरणों के लता-मण्डप से घिरा सूर्य-विम्ब ।

Your gold-like lovely body seated on the throne emitting multicoloured rays from the lustre of gems studded therein (throne) resembles the Sun with its radiant rays shining on the high peak of the Eastern mountain.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।

आपकी स्वर्णाभ देह, जिस पर कुन्द-पुष्पों से शुभ्र चौंर ढुर रहे हैं, अप्रतिम शोभाओं से अभिमण्डित ऐसी लगती है मानो स्वर्ण-सुमेरु के उन्नत तट उदीयमान चन्द्रमा की किरण-प्रपात-धाराओं में प्रतिष्ठित हों ।

Your gold-like glittering body intensely beautified by the waving of the clean white (like kund flowers) flappers (chanwars whisks made of bos grunniens Hairs), looks elegant, like the lofty peak of Sumeru mountain, with strerms of water as white and clean as the rising Moon, flowing on either sides of it in great torrents.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

छत्रत्रयं तव विभाति शशांकान्त-
मुच्चैःस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ।।

आपके शिरोपरि प्रदेश को अलंकृत करने वाले तीन छत्र आपकी त्रिलोकपरमेश्वरता के उद्घोषक हैं। चन्द्रमा की भाँति सौम्य-शुभ्र, मोतियों की झालर से द्युति-समृद्ध इन छत्रों ने सूर्य-रश्मियों की प्रचण्डता को रोक लिया है। वस्तुतः ये तीनों आपकी त्रिलोकवर्ती प्रभुता के जीवन्त प्रतीक हैं।

The three-fold moon-like umbrellas raised high above your head, greatly beautified by the pearl frills, and keeping off the heat of the Sun's rays, proclaim your paramount supremacy, omnipotence over the three worlds.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

गम्भीरताररवपूरितदिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।।

सारा आकाश आपके कीर्ति-घोषों से अनुगुंजित है। यह दुन्दुभिघोष सद्धर्म/समीचीन जैनधर्म का जयजयकार है। अगजग व्यापी यह गंभीर-अनवरत रव समस्त दिशाओं में समा गया है। यह तीन लोक के प्राणियों को शुभ समागम की विभूति लुटाने वाला है।

Filling all quarters with deep and loud sound the beat of kettle drums, skilled in announcing the grandeur of the auspicious society to the people of the three worlds, glorifying the victory of the sovereign master of Religion, is moving in the sky proclaiming your fame.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात–
सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ।।

उल्लास-पूरित देववृन्द आकाश से मन्दार, नमेरु पारिजात और सन्तानक नामक कल्पवृक्ष-पुष्पों की, गन्धोदक की, सुख-स्पर्शी फुहारयुक्त वृष्टि कर रहे हैं; जिसे देख ऐसा प्रतीत होता हैं मानो आपके दिव्य वचन पंक्ति बाँध उतर रहे हैं ।

The shower of clusters of flowers of the tress Mandar, Sunder, Nameru, Suparijat and Santanak etc., falling down gently from the sky with the auspicious mild breeze laden with drops of perfumed water, looks as if the continuous flow of Divine and excellent words is pouring out of your mouth.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या–
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ।।

तुम्हारे, संपूर्ण प्रकर्ष से उदीयमान परस्पर सटे असंख्य सूर्यों की तरह खूब शोभन भा-मण्डल की अतिशय आभा तीनों लोकों के समस्त दीप्तिमान पदार्थों की कान्ति को तिरस्कृत/लज्जित/अथवा बौना करती है, और चन्द्रमा के समान सौम्य होने पर भी रात्रि को जीतती है ।

O Majestic Lord ! the excessive light of your glittering Halo, surpassing the lustre of the brilliant objects of the three worlds, despite being dazzling like the raging radiance of hundreds of Suns, that overcomes the darkness of night, it is gentle and mild like the light of the Moon.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-
भाषास्वभावपरिणामगुणैःप्रयोज्यः ।।

स्वर्ग और मोक्ष के मार्ग का अनुसंधान करने वाले मुमुक्षुकों को अभिप्रेत तथा तीनों लोकों को समीचीन धर्म का उपदेश देने में खूब निपुण, विशदार्थ, सर्वगम्य भाषा, पदार्थों के विस्तृत/असंदिग्ध निरूपण में समर्थ, लोक-प्रयुक्त समस्त भाषाओं/ बोलियों/उपबोलियों की प्रकृति के अनुरूप परिणत होने की क्षमताओं से सम्पन्न तुम्हारी दिव्य-ध्वनि होती है ।

Your Divine Voice which is indispensable in seeking out the path to heaven and salvation, singularly proficient in expounding the essentials of the right Religion of the three worlds and clear with profound meanings, is endowed with the faculty of being made comprehensible to every one is his own language.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

उन्निद्रहेमनवपंकजपुञ्जकान्ती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ।।

हे जिनेन्द्र ! सद्यः विकसित स्वर्णकमल-समूह के समान कान्ति को धारण करने वाले, चारों ओर तरंगित नख-द्युति की किरणों की अनोश्री से सुशोभित तुम्हारे चरण जहाँ भी संस्थित होते हैं वहाँ देववृन्द सुवर्ण कमलों को खिलाते जाते हैं ।

O Jinendra (the Lord of conquerors) ! gods create lotuses wherever you step. Your pair of feet which bear the lustre of recently blown lotuses of gold are beautified by the rays of light skipping from the nails.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥

हे प्रभो ! धर्म-देशना के क्षणों में आपकी जो मनोज्ञ विभूति होती है, क्या वैसी किसी और को प्राप्य है ? सही है, अन्धकार को विच्छिन्न करने की जो क्षमता, जो ऊर्जस्विता सूरज में होती है, स्वभावतया नक्षत्रों में वैसी नहीं देखी जाती ।

O Jinendra ! the Exuberant erudition manifested by you during the course of Religious Preachings was never attained by any body else. The dazzling radiance perceptible in the Sun is capable of destroying the darkness, that rediance can never be obtained by a cluster of shining planets or stars.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम्
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥

झुरते हुए मद से मलिन और चंचल, कनपटी पर मतवाले हुए मँडराते हुए भौंरों की गूँज से कोप-विवृद्ध, ऐंरावत की भाँति भीमकाय, निरंकुश हाथी को सम्मुख आते देख आपका शरणागत पुरुष भयभीत नहीं होता (स्थितप्रज्ञ बना रहता है)।

The devotees who have taken shelter in you are not terrified in the least when they see themselves attacked by the unruly and intoxicated huge elephant, (Airawat like-god Indra's elephant) whose temples are restless and drenched on account of the constant dripping of ichor, who has been provoked by the exeited humming bees flying near the frontal globes.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ।।

विदीर्ण हाथियों के गण्डस्थलों से झरते शुभ्र, किन्तु रक्ताक्त गज-मुक्ताओं से अलंकृत किया है जिसने भू-भाग को और जो छलाँग मारने के लिए उद्ग्रीव/सन्नद्ध है ऐसा आक्रामक सिंह उसके पंजों के बीच पड़े, तेरे चरण-युगल रूपी पर्वत के आश्रित जन पर हमले का साहस नहीं करता ।

The lion (king of the beasts) who has decorated a part of the ground with a lot of white pearls drenched in blood from the rent temples of elephants and has assumed a posture of aggression, cannot attack the man who has taken refuge at your mountain-like feet, even though he has fallen into his clutches.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

कल्पान्तकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ।

प्रलय के उनचास पवन से उत्तेजित अग्नि के समान धधकती, लपलपाती, चिनगारियाँ फेंकती/उगलती, विश्व को निगल जाने की अदम्य वासना लिए, सामने आती दावाग्नि भी तुम्हारे नामसंकीर्तन-रूपी जल से पूर्णतः शान्त हो जाती है ।

The furious forest conflagration like the intense fire moving ahead infuriated by the violent storms of the tempests of Destruction, tossing up sparks and blazing up in flames, spreading swiftly as if intent to reduce the universe to cinder, is quickly quietened totally by the water of your laudation.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंक-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ।।

जिस भक्त के हृदय में तेरे नाम की नागदमनी विद्यमान है, वह लाल-लाल आँखों वाले, उन्मत्त कोकिल के कण्ठ के समान काले, क्रोध में बावले, दंश के लिए फन उठाये, सम्मुख आते साँप को भी निःशंक लाँघ जाता है।

The man who possesses the Nagdamni (Asparagus Plant) of your name rooted in his heart, fearlessly treads over the most poisonous red eyed serpent as black as the neck of an intoxicated Cuckoo, and indignant with rage ready to sting with its hood raised.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ।।

रणभूमि में, तुम्हारे नाम-संकीर्तन के प्रभाव से, बलशाली राजाओं की, युद्ध में जूझते घोड़ों और हाथियों के हिनहिनाने/ चिंघाड़ने से जिसमें दिल दहलाने वाला रौरव हो रहा है ऐसी सेना भी उदीयमान सूर्य की किरणों से नष्ट अन्धकार के समान शीघ्र ही नाश को प्राप्त होती है।

By praising you the powerful armies of the warrior kings, in a battle resounding with the noise of galloping horses and trumpeting elephants, are instantaneously vanquished like the dispersion of the thick nocturnal darkness by the rays of the rising Sun.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह–
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा–
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ।।

बरछों की नोंकों से आहत हाथियों के रक्त-जल-प्रवाह में वेग से उतरने और उसे तैर जाने के लिए उतावले योद्धाओं से युक्त भीषण रण में कठिनता से जीता जा सके ऐसे शत्रुपक्ष को आपके चरण-कमल-रूपी वन में आश्रित पुरुष सहज ही जीत लेता है ।

In the fierce battle in which the warriors are struggling to swim the streams of blood gushing out of the elephants rent up by the lancepoints, those having sought refuge in the forest of your lotus like feet, emerge victorious vanquishing even those unconquerable.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रङ्गतरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ।।

आपके नाम-स्मरण से, अत्यन्त भयावने मगर, मच्छ, घड़ियाल आदि के क्रुद्ध होने तथा भीमाकार पाठीन नामक मत्स्य की पीठ के जहाजों से टकराने के परिणामस्वरूप उत्पन्न विलक्षण रूप में धधकती वाड-वाग्नि से क्षुब्ध समुद्र में तीव्र वेग में उछलती तरंग-शिखरों पर डगमगा रहे जहाज लिए भक्त पुरुष अप्रत्याशित संकट से उबर कर पार निकल जाते हैं/तट पर पहुँच जाते हैं ।

Persons seated in the ships staggering on the summits of the impetuous waves of the ocean infested with the terrible crocodiles, alligators, whales and peesh aquadits etc. and by the dreadful submarine fire, sail to the shore fearlessly by contemplating your name.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥

उत्पन्न जलोदर-व्याधि के भार से जो कुबड़ा गये हैं, जिनकी अवस्था शोचनीय है, जिनके जीने की कोई सम्भावना शेष नहीं है, ऐसे मनुष्य भी तुम्हारे चरण-कमल के धूलि-अमृत से शरीर को लिप्त कर कामदेव के समान रूपवान हो जाते हैं ।

Persons, bent down under the weight of horribly swollen dropsy, having reached a precarious stage and have lost of survival are also cured and transformed into handsomeness like that of god Cupid by anointing the nectar of the pollen of your lotus like feet.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ।।

हे प्रभो ! पाँव से ग्रीवा तक बड़ी बड़ी सुदृढ़ साँकलों से जिनके अंगांग जकड़े हुए हैं और खूब कसी हुई बड़ी-बड़ी बेड़ियों/जंजीरों की कोरों की रगड़ से जिनकी जाँघें छिल गयी हैं ऐसे मनुष्य भी तुम्हारे नामरूपी मन्त्र का सतत स्मरण करने से अविलम्ब/तत्क्षण आपोआप बन्धन के भय से संपूर्णतः मुक्त हो जाते हैं ।

Persons who are always kept cordoned by strong Iron Chains right from the ankle to the neck, whose thighs have been badly bruised by the frictions of the corners of big shackles, get themselves rid of them immediately and have no fear of confinement by incessantly (day and night) reciting your name, which takes the shape of a kind of incantation.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि,
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ।।

जो प्रज्ञ पुरुष आपके इस स्तोत्र का अध्ययन/वाचन करता है उसके मदोन्मत्त हाथी, आक्रामक सिंह, धधकती दावाग्नि, काले नाग, भीषण संग्राम, क्षुब्ध वारिधि, असाध्य जलोदर तथा कठोर कारावास से उत्पन्न भय आपोआप भयभीत होकर यथाशीघ्र नष्ट हो जाते हैं ।

The wise man who recites this Panegyric of you has found that this fear arising out of intoxicated elephant, lion, fire, serpent, battle, ocean, dropsy and bonds suddenly vanish away as if it (fear) were being frightened.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ? गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥

हे जिनेश्वर ! इस जगत् में मेरे द्वारा भक्तिपूर्वक अनन्त ज्ञानादि गुणों से गूँथी गयी मनोज्ञ वर्णों/मनोहारी रंगों के बहुविध पुष्पों वाली तुम्हारी इस स्तोत्र-रूप माला को जो पुरुष सदैव कण्ठ में धारण करते हैं अथवा इसे कण्ठाग्र करते हैं उस प्रतिष्ठित पुरुष को अथवा इस स्तोत्र के शिल्पी मानतुंग को राज्य/स्वर्ग/मोक्ष/काव्य-रूपा लक्ष्मी विवश होकर वरण करती है ।

O Lord ! in the world the goddess of Prosperity (wealth, dignity, heavens and salvation) will be impelled to approach the person who always wears round his neck (keeps by his heart) this garland of the Eulogy composed by (Acharya) Mantung Preceptor in the elegant style of your innumerable virtues (infinite knowledge etc.) and interwoven in multifarious flowers of varied and attractive (alliterations, pun, etc.) hues.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

□

भक्तामर स्तोत्र

भक्ति–रस का अद्वितीय काव्य है। इसके प्रत्येक श्लोक में वीतराग भक्ति की दिव्य शक्ति छिपी है। इसके श्रद्धापूर्वक नित्य पाठ से जीवन में आनन्द–मंगल और शांत्ति का स्रोत उमड़ता है।

□□

भक्ति, तत्व ज्ञान, कथा–काव्य चोपी शास्त्र और विविध विषयों के साहित्य के लिए सम्पर्क करे—

श्री अमोल जैन ज्ञानालय
कल्याण स्वामी रोड
धुलिया (महाराष्ट्र)

□ □ □

सहुलियत मूल्य १–०० रुपया

मुद्रक :– रुणवाल प्रिन्टर्स ग. नं. २ धुलिया.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.